Knowledgeable Research (An International Peer-Reviewed Multidisciplinary Journal) **ISSN 2583-6633**
Available Online: http://knowledgeableresearch.com Vol.04, No.3, March, 2025

ग्रामीण विकास के शिक्षा की प्रभावशीलता

आकाश भारती
शोधार्थी - समाजषास्त्र
एम. जे. पी. रूहेलखण्ड विश्वविद्यालय, बरेली

****

Abstract: प्रस्तुत शोध-पत्र शारत में ग्रामीण विकास की अवधारणा: एक समाजशास्त्रीय अध्ययन पर आधारित है। भारत गाँवों का देश है। 2011 की जनगणना के अनुसार यहाँ 6,40,867 गाँव हैं। इन गाँवों में देश की 68.8 प्रतिशत आबादी रहती है। यह आबादी भारत की रीढ़ कही जाती है। निम्न आय वर्ग से सम्बन्ध रखती है किन्तु देश के विकास और भारत के पोशण को आधार प्रदान करती है। स्वयं अभाव में जीवनयापन करने वाला ग्रामीण समाज उस शहरी सभ्यता के विकास की ऊँची बुलन्दियों को छूने में मदद कर रहा है। जिसे भारत के नाम से जाना जाता है। महानगरों और छोटे शहरों की चमक-दमक के पीछे पृष्ठभूमि में एक ऐसा समाज भी है, जो आज भी विकास की बाट जोह रहा है। जोकि भारत के विकास के लिए आवष्यक है। बगैर ग्रामीण विकास के अब्दुल कलाम का 2020 तक भारत के विकसित देश बनने का सपना सिर्फ सपना ही रह गया और रह सकता है। समय और वास्तविक विकास की प्राप्ति के लिए ग्रामीण क्षेत्रों के विकास की मुख्यधारा में षामिल करना होगा क्योंकि ग्रामीण विकास ही समय-विकास की कुँजी है।

Keywords: - ग्रामीण विकास, *शिक्षा, प्रभाव, अध्ययन*

****

प्रस्तावना:

प्रस्तुत शोध पर ग्रामीण विकास के शि क्षा की प्रभावशी लता: एक समाजषास्त्रीय अध्ययन पर आधारित है। ग्रामीण विकास के शि क्षा से ही राष्ट्र का विकास सम्भव है। राष्ट्रपति द्रोपदी जी के उच्च निर्णयों से भी ग्रामीण विकास के शि क्षा में बढ़ोत्तरी आयी और प्रधानमंत्री जी के सहयोग से ग्रामीण क्षेत्रों में शि क्षा का प्रसार हुआ।

हमारे राष्ट्रपिता महात्मा गांधी जी का कथन है, "भारत की आत्मा गाँव में बसती है।" जब गाँव हैं तब देश है। इस मूलमंत्र के दृष्टियता रखते हुए यह अवष्यवाणी हो जाता है कि देश के गाँवों को विकास की शि क्षा के पथ पर अग्रसर किया जाए, गाँवों की विकास की मुख्यधारा में समाहित किया जाए। विकास का मूलभूत उद्देष्य एक समाजवादी सामाजिक व्यवस्था को सुनिष्चित करना है। जहाँ पर सभी व्यक्ति समान हों, सभी के लिए समान रूप से अवसरों की समानता विद्यमान हो तथा विभिन्न क्षेत्रों, समाज एवं वर्ग आदि में असमानता की लकीरों को नहीं।

भारत में ग्रामीण विकास की चेतना का सूत्रपात राष्ट्रपिता महात्मा गांधी जी के द्वारा किया गया। उन्होंने 6 मई 1939 को वृन्दावन में ग्राम सेवकों द्वारा आयोजित एक सभा को सम्बोधित करते हुए कहा था, "यह देखकर मुझे बहुत दुःख होता है कि आप लोगों में से अधिकांश या तो शहर से आये हैं या शहरी जीवन से अभ्यस्त हो गए हैं। जब तक अपना मन शहर से हटाकर गाँवों में नहीं लगायेंगे, तब तक गाँवों के लोगों की सेवा आप नहीं कर सकते। आपको यह भी समझ लेना चाहिए कि हिन्दुस्तान गाँवों के ताने-बाने से बना है, शहरों से नहीं। और जब तक आप ग्राम्य जीवन का प्रवाह अवरूद्ध हो गया है और ये

मृतप्राय है। इस आधारभूत सिद्धान्त को यदि आप आत्मसात नहीं करते तो ग्राम पुनःनिर्माण के उस कार्य में समाहित लगने वाला सारा समय व्यर्थ जाएगा।"

उद्देष्य:

ग्रामीण शि क्षा के विकास की अवधारणा के निम्नलिखित उद्देष्य हैं:-

1. ग्रामीण क्षेत्रों में कृशि के लिए आधुनिक तकनीकी को लागू करना ताकि उत्पादकता दर में कृशि विकास हो सके। परिणामस्वरूप ग्रामीण विकास की भूमि राष्ट्रीय बाजार में उत्पादन बढ़ाने के लिए और सस्ती तकनीक स्थापित करना है।
2. बेहतर आर्थिक संचार के लिए स्थानीय षासन निकायों और केन्द्रीय षासन के बीच की खाई को पाटना। इसके अलावा ग्रामीण शि क्षा विकास का उद्देष्य विषेशज्ञों द्वारा तैयार की गई नीतियों को आगे बढ़ाने के लिए पंचायतों को कार्यकारी शक्तियाँ प्रदान करना है।
3. भारत में ग्रामीण बुनियादी ढांचे के निरन्तर विकास को सुनिष्चित करना इसके अलावा इस प्रक्रिया में सभी स्थानीय ग्रामीण आबादी को षामिल किया जाना चाहिए। नतीजन, उन्हें बड़े पैमाने पर आर्थिक निर्णय लेने की एजेंसी मिलेगी जो क्षेत्र आधारित विकास की ओर ले जाएगी।
4. ग्रामीण समुदायों के लिए गुणवत्ता पूर्ण शि क्षा तक पहुँच बढ़ाना, दूरी और बुनियादी ढांचे की कमी जैसी बाधाओं को कम करना।
5. शिक्षा के माध्यम से सामाजिक परिवर्तन को बढ़ावा देना, लैंगिक समानता, स्वास्थ्य जागरूकता और पर्यावरणीय स्थिरता को बढ़ावा देना।

अंत में ग्रामीण शि क्षा के विकास का उद्देष्य किसी क्षेत्र के प्राकृतिक संसाधनों का उपयोग करके निवासियों के लिए अधिकतम आर्थिक संसाधन है और उत्पादकता को बढ़ावा देने के लिए महत्वपूर्ण भूमि सुधार उपाय भी षामिल है।

कुछ और बिन्दुओं के माध्यम से हम उद्देष्यों के समझने का प्रयास कर सकते है:-

1.सामूहिक विकास: शि क्षा ग्रामीण क्षेत्रों में सामूहिक और सांस्कृतिक विकास को बढ़ावा देती है जो सामाजिक सहमति और एकता को बढ़ाता है।

2.पर्यावरणीय संरक्षण: शि क्षा आवष्यक ज्ञान प्रदान करती है जो पर्यावरणीय संरक्षण को समझने और उसके लिए कार्यवाही करने में मदद करती है।

3.ज्ञान और कुशलता: ग्रामीण क्षेत्रों में ज्ञान और कौशल के स्तर को ऊँचा करना जिससे लोगों की प्रगति में मदद मिले।

4.स्थानीय रोजगार की स्थिरता: उच्च गुणवत्ता वाली शि क्षा स्थानीय रोजगार के अवसरों की स्थिरता को बढ़ाती है जिससे कि लोग स्थानीय स्तर पर ही रोजगार और आजीविका पा सकें।

5.शिक्षित और सक्षम समाज का निर्माण: शि क्षा ग्रामीण क्षेत्रों में लोगों को जागरूक और सक्षम बनाती है जो उन्हें स्वयं की समस्याओं को समझने और समाधान करने के लिए प्रेरित करती है।

6.रोजगार के अवसरों का विस्तार: उच्च गुणवत्ता वाली शि क्षा ग्रामीण क्षेत्रों में उचित कौशलों और ज्ञान की प्राप्ति के द्वारा रोजगार के अवसरों को बढ़ाती है।

7.समानता की बढ़ावत: लड़कियों और लड़कों के बीच शि क्षा में समानता स्थापित करना।

8.ग्रामीण आर्थिक विकास: शि क्षा के माध्यम से ग्रामीण क्षेत्रों में आर्थिक विकास को सम्भव बनाना।

साहित्य की समीक्षा:

ग्रामीण शि क्षा के विकास की साहित्य की समीक्षा निम्न प्रकार है:-

1.पहुँच और समानता: अध्ययनों से पता चला है कि ग्रामीण छात्रों को गुणवत्ता पूर्ण शिक्षा तक पहुँचने में महत्वपूर्ण बाधाओं का सामना करना पड़ता है।

2.समुदाय की भागीदारी: साहित्य ने ग्रामीण शि क्षा में समुदाय की भागीदारी के महत्व पर प्रकाश डाला है जिसमें माता-पिता की भागीदारी और स्थानीय षासन षामिल हैं।

3.टेक्नोलाजी एकीकरण: शोध ने ग्रामीण शि क्षा में टेक्नोलाजी एकीकरण के महव पर प्रकाश डाला है जिसमें ई-लर्निंग और डिजीटल संसाधन षामिल हैं। (आईटीयू, 2020)

4.शिक्षण-प्रश क्षण: षोध ने ग्रामीण शि क्षा परिणामों को बेहतर बनाने में शि क्षण-प्रशि क्षण और समरसता प्रदान की। (ओईसीडी, 2019)

5.प्रासंगिक पाठ्यक्रम: अध्ययनों से पता चला है कि एक प्रासंगिक और संदर्भित पाठ्यक्रम ग्रामीण छात्रों के लिए सीखने के परिणामों और सगाई में सुधार कर सकता है। (यूनीसेफ, 2019)

6.समावेशी शिक्षा: साहित्य ने ग्रामीण क्षेत्रों में समावेशी शिक्षा के महŸव पर जोर दिया है जिसमें लिंग और विकलांगता में असमानता को सम्बोधित किया गया है। (यूनेस्को, 2019)

7.आर्थिक सशक्तिकरण: अध्ययनों से पता चला है कि ग्रामीण शि क्षा आर्थिक सशक्तिकरण से जुड़ी हुई है जिसमें उद्यमिता और आजीविका कौशल षामिल है।

8.सामाजिक और सांस्कृतिक परिवर्तन: शि क्षित ग्रामीण समुदायों में सामाजिक और सांस्कृतिक परिवर्तन आता है। महिलाओं और अल्पसंख्यक समुदायों की स्थिति में सुधार आता है और समाज में उनका योगदान बढ़ता है।

सैद्धान्तिक ढाँचा:

ग्रामीण शि क्षा के विकास के लिए प्रभावशी ल सैद्धान्तिक ढांचा विषेश रूप से उसके स्तर, उद्देष्य और प्रभाव को समझने में मदद करता है। यह ढांचा शि क्षा के समाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक और नैतिक मानकों को सुधारने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

ग्रामीण शि क्षा के विकास के लिए सैद्धान्तिक ढांचा न केवल शि क्षा को प्राप्त करने में मदद करता है बल्कि उन छात्रों को भी तैयार करता है जो अपने समुदाय और समाज के विकास में सक्रिय भागीदार बनने के लिए प्रेरित हों। ग्रामीण शि क्षा के विकास के निम्नलिखित बिन्दु हैं:-

1.सामाजिक न्याय और समानता का प्रोत्साहन: ग्रामीण शि क्षा के सैद्धान्तिक ढांचा उन बच्चों तक पहुँच प्रदान करता है जो

अधिकतर शहरी क्षेत्रों से दूर हैं। यह ढांचा सामाजिक न्याय और समानता को स्थायी रूप से संवेदनशी लता को बढ़ाता है। यह ढांचा उन विभिन्न समाजों और समुदायों के बच्चों तक शि क्षा पहुँचाने में सक्षम होता है, जो अकेले शहरी क्षेत्रों में शि क्षा की उपलब्धता से वंचित हैं। यह सामाजिक रूप से उनकी प्रगति और स्थानीय समृद्धि को बढ़ावा देने में सहायक होता है।

2.स्वतंत्रता और स्वाधीनता के मूल्यों का समर्थन: ग्रामीण शि क्षा का सैद्धान्तिक ढांचा स्वतंत्रता और स्वाधीनता के मूल्यों का समर्थन करता है। यह शि क्षार्थियों को अपनी सोच और कार्यवाही करने में स्वतंत्र बनाता है और उन्हें उनकी स्थानीय समस्याओं के समाधान में सक्रिय भागीदार बनाता है।

3.भौतिक विष्वास का प्रशि क्षण: ग्रामीण शि क्षा के सैद्धान्तिक ढांचा द्वारा भौतिक विष्वास को प्रोत्साहित किया जा सकता है। यह ढांचा छात्रों को उनके पर्यावरण, गाँवों और किसानों की जीवनषैली को समझने में मदद करता है। साथ ही, उन्हें वैज्ञानिक और प्रौद्योगिकी विकास के लिए प्रेरित करता है।

4.सांस्कृतिक समृद्धता का समर्थन: इस ढांचे के माध्यम से सांस्कृतिक समृद्धता को बढ़ावा दिया जा सकता है। यह शि क्षा विद्यार्थियों को उनकी भाषा, संस्कृति और स्थानीय रीति-रिवाजों को समझने में मदद करती है और उन्हें अपनी सम्पूर्ण पहचान का अनुभव करने की क्षमता प्रदान करती है।

5.प्राथमिक शिक्षा की पहुँच: ग्रामीण शि क्षा के सैद्धान्तिक ढांचे को उन बच्चों तक प्रदान करना है जो अधिकतर शहरों से दूर हैं। यह ढांचा सामाजिक न्याय और समानता को स्थापित करने में मदद करता है जिससे समुदाय के सभी सदस्यों को विकास के समान अवसर मिल सके।

6.स्वतंत्र विचारधारा: इस ढांचे के माध्यम से बच्चों को स्वतंत्रता से सोचने और कार्य करने की प्रेरणा मिलती है। वे अपने समाज और पर्यावरण के विकास में सक्रिय भागीदार बनते हैं और अपनी समस्याओं के समाधान के लिए स्वाधीनता से कार्य करते हैं।

7.भौतिक और तकनीकी ज्ञान का विकास: यह ढांचा छात्रों को उनके पर्यावरण में भौतिक व तकनीकी ज्ञान के विकास के लिए प्रेरित करता है। उन्हें ग्रामीण क्षेत्रों के विकास की चुनौतियों को समझने में मदद करता है तथा उन्हें हल करने के लिए नई प्रौद्योगिकी समाधानों को अनुसरण करने की प्रेरणा देता है।

8.ग्लोबल एजेंडा के साथ संगतता: ग्रामीण शि क्षा का सैद्धान्तिक ढांचा समस्याओं को ग्लोबल मानकों और उद्देष्यों के साथ संगत बनाने में मदद करता है। यह ढांचा शि क्षा को उन उच्चतम मानकों तक पहुँचाने में मदद करता है जो सामाजिक न्याय और लैंगिक समानता और पर्यावरणीय संरक्षण को प्रोत्साहित करते हैं।

यह सभी बिन्दु ग्रामीण शि क्षा के सैद्धान्तिक ढांचे के प्रारूप हैं, जिनकी सहायता से शि क्षा को गाँव-गाँव तक पहुँचाया जाय, इस विशय में वार्ता होती है।

निष्कर्ष:

एक बात तो स्पष्ट हो चुकी है कि बिना शि क्षा के ग्रामीण क्षेत्र का विकास असंभव है। गाँवों तक शि क्षा पहुँचाना, गाँव के विकास के लिए अत्यन्त महत्वपूर्ण साबित हुआ है। आज

ग्रामीण क्षेत्रों को अनेक प्रकार के उत्पादक कार्यों की ओर उन्मुख कर वहाँ एक नए उत्साह और स्फूर्ति का संचार करना आवष्यक हो गया है। ये कार्य हो सकते हैं, जैसे गाँव में बिजली होना भी ग्रामीण शि क्षा के विकास के लिए आवष्यक है। अतः सभी कुछ खोजने के बाद निष्कर्ष आता है कि यदि शि क्षा ग्रामीण क्षेत्रों में आएगी तो सामाजिक विकास अर्थात् समाज के विचारों में परिवर्तन व कूटनीतियों से छुटकारा मिल पाएगा। और आर्थिक विकास अर्थात् यदि शि क्षा का प्रसार होगा तो रोजगार के अवसर भी बढ़ेंगे जिससे गाँव के लोगों को आर्थिक रूप से लाभ होगा। इसी स्पष्टता से हमें ग्रामीण क्षेत्रों में शि क्षा का प्रसार करना महत्वपूर्ण माना जाता है। इससे हम पर्यावरण और ग्रामीण विकास को बढ़ावा दे सकते हैं। अन्ततः ग्रामीण विकास के शि क्षा की प्रभावशी लता यही है कि ग्रामीण क्षेत्रों में शि क्षा अनिवार्य रूप से पहुँचायी जाए ताकि गाँव के लोगों को कृशि में भी सहायता हो सके।

संदर्भ

1- Rural Society in india
2- Rural Development
3- www.aliciationfoundation.com
4- www.gyan.com
5- www.google.com
6- www.youtube.com

Corresponding Author: Akasha Bharti
E-mail: akashbharti1851@gmail.com
Received: 05 March, 2025; Accepted: 17 March, 2025. Available online: 30 March, 2025
Published by SAFE. (Society for Academic Facilitation and Extension)
This work is licensed under a Creative Commons Attribution-Noncommercial 4.0 International License